डॉ. नीतू परिहार
सह आचार्य एवं विभागाध्यक्ष,
हिन्दी-विभाग,
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर
मो. नं. : 9413864055
Email : neetuparihar11@gmail.com

लेखक परिचय

नाम : डॉ. नीतू परिहार

जन्म : 26 नवम्बर, 1974

शिक्षा : पीएच. डी., एम. ए (हिंदी, संस्कृत)

संप्रति : सह आचार्य एवं विभागाध्यक्ष हिंदी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)

प्रकाशन : समकालीन हिंदी कविता का काव्यशास्त्र-2002, हिंदी नाट्य साहित्य और रंगमंच-2015, वागड़ का लोक साहित्य, (ई-पुस्तक)-2021, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में साहित्य, संस्कृति और समाज विषयक शोध आलेख, समीक्षाएँ, समकालीन कविता पर शोध। वर्तमान में आप शिक्षा मंत्रालय के राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान प्रोजेक्ट 'वागड़ का लोक साहित्य' के सह अन्वेषक हैं।

अनुभव : गत 18 वर्षों से अध्यापन, शोध एवं शोध निर्देशन।

प्रकाशन

ISBN : 978-81-86064-68-7

₹ : 500.00

हिन्दी के समकालीन कवि: सर्जना के आयाम सं. डॉ. नीतू परिहार

हिन्दी के समकालीन कवि
सर्जना के आयाम

संपादक
डॉ. नीतू परिहार

हिंदी के समकालीन कवि : सर्जना के आयाम

समीक्षात्मक आलेख

संपादक
नीतू परिहार

अंकुर प्रकाशन
ANKUR PRAKASHAN

हिंदी के समकालीन कवि : सर्जना के आयाम
समीक्षात्मक आलेख

ISBN : 978-81-86064-88-7
© : लेखक
मूल्य : रु ????
संस्करण : 2022
प्रकाशक : अंकुर प्रकाशन
1/1 कांजी का हाटा, गायत्री मार्ग
उदयपुर (राज.) 313001
फोन नं. : (0294) 2417094,2417039
(मो.) 9413528299
ईमेल : ankurprakashan15@gmail.com
आवरण : एस.पी.आर्ट, उदयपुर
टाईपसेटिंग : देवेन्द्र कम्प्यूटर, दिल्ली
मुद्रक : आर्यन डिजिटल प्रेस,दिल्ली

Hindi Ke Samkaleen Kavi : Sarjana Ke Ayam
Sampada By : Neetu Parihar ₹ .00

आमुख

मुझे चूल्हे की आग-सी धधकती कविताएँ चाहिए
खेतों में बालियों-सी लहलहाती कविताएँ चाहिए
मुझे मोहब्बत के नशे में डूबी कविताएँ चाहिए
भोली गिलहरी-सी फुदकती कविताएँ चाहिए

— *प्रतिभा कटियार*

कविताएँ सदा ही मेरे आकर्षण का केन्द्र रही हैं। जब भी कोई पुस्तक, पत्रिका हाथ में आती है तो पहली नज़र कविता को ही खोजती है। कविताओं को मैं बचपन से लिखने भी लगी हूँ, जिन कविताओं का अर्थ पढ़ने के साथ ही समझ आ जाता है वह मुझे ज्यादा अच्छी लगती है। कविता हिंदी साहित्य में कई पड़ाव पार कर आज भी शिखर पर स्थित है।

पहले-पहल कविताएँ लयात्मक और तुक में लिखी जाती रहीं, यह लयात्मकता ही उन्हें स्वरवाली बनाती रही। धीरे-धीरे परम्परागत बन्धनों को छोड़कर कविताएँ मुक्त छन्द में हमारे सामने आईं। आज आधुनिक समय में भी कविताएँ अपने नए रूप और कलेवर के साथ साहित्य में उपस्थित हैं। आज की कविताएँ अपने समय की साक्षी हैं। उनमें कोई विषय ऐसा नहीं जिस पर बात न की गयी हो। आधुनिक कविताओं में सिर्फ प्रेम ही एक विषय नहीं है बल्कि आतंकवाद, पर्यावरण, प्रदूषण, घटते जंगल, सागर, नदियाँ, पहाड़, वृद्धाश्रम, स्त्री-शोषण, राजनीति, दरकते रिश्ते आदि अनेकों विषय हैं जो कविताओं में अपना स्थान बना रहे हैं।

आज की कविता अपने आसपास घटित हो रही घटनाओं को अपने में

अनुक्रम

क्र.सं.	शीर्षक/लेखक	पृ. संख्या
1	विश्वास के दीये-सी टिमटिमाती : वर्तिका नन्दा—*नाम दें*	13
2	अनुज लुगुन की कविताओं में आदिवासी जीवन—*डॉ० नवीन नन्दवाना*	22
3	आखर अनन्त और जीवन में आस्था के कवि : विश्वनाथ प्रसाद तिवारी—*डॉ० प्रीति भट्ट*	33
4	धूमिल : स्वातन्त्र्योत्तर कविता के उज्ज्वल 'मोची राम'—*डॉ० महेश चन्द्र तिवारी*	42
5	पवन करण की कविताओं में प्रतिबिम्बित नारी—*डॉ० नीता त्रिवेदी*	50
6	ममता कालिया की कविताओं में स्त्री-संघर्ष की गूँज—*डॉ० उषा शर्मा*	64
7	मंगलेश डबराल की कविताओं का सामाजिक स्वर—*डॉ० ममता पानेरी*	71
8	विजयदेव नारायण साही : सरल धरती का अभिलाषी कवि—*डॉ० कैलाश गहलोत*	77
9	अनामिका के काव्य में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति—*एकता देवी*	86
10	समकालीन बोध और धूमिल की कविता—*विद्याप्रभाकर डॉ० कनुप्रिया प्रचंडिया*	94